[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3244

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

प्रगति वर्मा
मातुश्री अहिल्यादेवी टीचर्स एज्युकेशन इंस्टीट्यूट, सुल्लाखेड़ी, इन्दौर

प्रस्तावना

मानव जीवन का अस्तित्व, प्रगति विकास संसाधनों पर निभ्रर करता है । आदिकाल से मनुष्य प्रकृति से विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ प्राप्त कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता है वास्तव में संसाधन वे है जिनकी उपयोगिता मानव के लिए हो, अन्य जीवों के समान ही मानव भी पर्यावरण का ही एक अंग है परन्तु एक विभिन्नता जो सहज ही परिलक्षित होती है वह यह है कि अन्य जीवों की तुलना में मानव अपने चारों ओर के पर्यावरण को प्रभावित तथा कुछ अर्थो में उसे नियंत्रित कर पाने की पर्याप्त क्षमता है यही कारण है कि मानव का पर्यावरण के साथ संबंधों को इतना महत्व दिया जाता है ।

आधुनिक जीवन में मानव तथा पर्यावरण के संबंधों की समस्या से अधिक उत्सुकता का अन्य कोई विषय नहीं है । इस जागरूकता की गति विकासशील देशों में मंद रही है तथा इसका समाधान संपूर्णता से अभी–अभी ही अनुभव किया जाने लगा है ।

विगत् कुछ दशकों में पर्यावरणीय सजगता का वैश्विक आयाम प्रकट होने लगा है । यह महसूस किया गया है कि पृथ्वी की प्रकृति व्यवस्था से भूमि, वायु, जल आदि का अप्रत्याशित नुकसान किया जा रहा है पृथ्वी पर जीवों की भावी उत्तरजीविता को खतरा उत्पन्न होने लगा है अब समग्र रूप से सोचने की आवश्यकता पड़ रही है अब यह महसूस किया जाने लगा है कि विश्व का भाग्य हमारे हाथो में है ।

मनुष्य को प्रकृति के प्रति तिरस्कार का परिणाम भी सहना पड़ा है । इस सबके कारण ही आज इस बात की प्रबल आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है कि किस प्रकार प्रकृति का उपर्युक्त संतुलन पुनः प्राप्त किया जा सकता है अब हमें अपने तकनीकी कौशल का उपयोग अपने खोये हुए पर्यावरण को पुनः प्राप्त करने के तरीकों में करना होगा ।

प्राकृतिक संसाधन

मानव जीवन जिन आधारभूत साधनों पर आधारित है और जिनसे उसकी भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है वे सभी संसाधन कहलाते है, क्योंकि यह सभी प्रकृति से विरासत में मिले है और पर्यावरण के प्रमुख घटक हैं, अतः इन्हें प्राकृतिक संसाधन कहते है । मुख्य प्राकृतिक संसाधनों में और ऊर्जा, वायु, जल, भूमि, वनस्पति, प्रकाश, पृथ्वी का ताप, जीवाश्म ईंधन, खनिज, जन्तु व सूक्ष्म जीव आदि सम्मिलित हैं ।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का आशय उनके अधिकतम सदुपयोग एवं मानव कल्याण में लाभ के लिए हैं। संसाधन के कुशल प्रबंध के लिए यह आवश्यक उनके अनावश्यक दोहन एवं उपलब्ध भण्डार से संरक्षित किया जाए । वर्तमान समय में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति के कारण संसाधन संरक्षण की परम आवश्यकता है । संक्षिप्त में मोटे तौर पर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के संदर्भ में निम्न उद्देश्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं –

संसाधनों को आवश्यकतानुसार ही सीमित उपयोग किया जाये जिससे वे अधिक दिनों तक रह सकें। उन्हें प्रदूषित होने से बचाया जाए जिससे वह मनुष्यों के खराब स्वास्थ्य का कारण न बने

यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण केवल उसके उपयोग हेतु उपलब्धता के लिए ही नहीं है, बल्कि विश्व में पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाने और उसे अनमोल खजाने के शाश्वत सत्य के साथ संरक्षित रखने के लिए भी है ।

प्राचीन काल में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की अवधारणा का कोई विशेष महत्व नहीं था । वर्तमान समय में विज्ञान एवं औद्योगिकी के विकास ने इस विषय पर सोचने के लिए मानव को विवश कर दिया है –

- यदि किसी संसाधन की माँग अधिक है और उसकी उपलब्धता कम है तो संरक्षण की प्रवृत्ति विकसित किया है ।
- जनसंख्या वृद्धि के कारण संसाधनों की बढ़ती हुई मांग ने संरक्षण की आवधारणा को विकसित किया है । उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं मानव जीवन के संतुलित विकास के लिए संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है ।

जल संरक्षण

प्राकृतिक संसाधनों में जल संसाधन का महत्वपूर्ण स्थान है । जल एक यौगिक है इतनी संरचना हाइड्रोजन के दो परमाणु एवं ऑक्सीजन के एक परमाणु से मिलने से हुई है इसका सूत्र भ्2व्होता है ।

जल संरक्षण के प्रमुख बिन्दु निम्न है –

1. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से जल को मुक्त रखना ।
2. कृषि तथा सिंचाई में कम मात्रा में जल का सिंचाई द्वारा उपयोग ।
3. जल प्रदूषण रोकने के नियमों का कडाई से पालन करना ।

वन संरक्षण

वनों का सदा से ही मानव जीवन में महत्व रहा है । आदिम मानव तो अपनी लगभग सभी आधारभूत आवश्यकताओं जैसे –भोजन, कपड़ा और आवास के लिए वनों पर ही पूर्णतया निर्भर रहता था । मानव की वनों पर निर्भरता किसी ना किसी रूप में आज भी बनी हुई है वन संरक्षण के प्रमुख बिन्दु निम्न है :–

1. भविष्य में वनों की कटाई इत्यादि पर रोक के नियम तथा उनका कड़ाई से पालन ।
2. वन संरक्षण के प्रति जनचेतना जागृत करना ।
3. नई प्रजातियों के उपलब्ध कराने के लिए जीन बैंक की स्थापना एवं विकास करना ।

भूमि संरक्षण

प्राकृतिक संसाधनों का भूमि एक ऐसा महत्वपूर्ण साधन है, जो मानव के अस्तित्व एवं जीवन के लिए परम आवश्यक है भूमि हमारी सामाजिक सांस्कृतिक एवं भौतिक व्यवस्था का आधार है अतः भूमि का संरक्षण अत्यंत आवश्यक होता है ।

भूमि संरक्षण के प्रमुख बिन्दु :–

1. स्तत् कृषि को बढ़ावा देना ।
2. पौधों के लिए जैविक खाद का उपयोग एवं सिंचाई के लिए टपकने वाली विधि का प्रयोग करें ।
3. स्थानीय एवं मौसमी सब्जियाँ खाएँ इससे परिवहन में इस्तेमाल होने वाली उर्जा तथा संग्रहण में खर्च होने वाली उर्जा बचेगी ।
4. रसोई के कचरे से कम्पोस्ट खाद बनाएँ तथा इसे घर के बगीचे एवं गमलों में प्रयोग करें ।

खनिज संरक्षण

खनिज पदार्थ विश्व में सबसे अधिक मूल्यवान प्राकृतिक साधन हैं ये किसी न किसी रूप में मनुष्य के काम आते हैं । नमक, आयोडिन, क्लोरिन जैसे खाद खनिज हमारे भोजन के स्थाई अंग है । इनके अभाव में मनुष्य

शरीर स्वस्थ्य नहीं रख सकता है । अतः खनिज संरक्षण मानव जीवन के अति आवश्यक तत्व के रूप में सामने आ रहा है ।

खनिज संरक्षण के प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है –

1. रेगिस्तानों, हिम शेखरे, समुद्र तल इत्यादि से दबे हुए खनिज, निक्षेपों की समुचित खोज तथा विस्तृत सर्वेक्षण किया जाना चाहिए ।
2. कोयला, पेट्रोल तथा अन्य खनिज इंधनों के प्रति स्थापित इंधनों की खोज गंभीरतापूर्वक की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

मानव जाति के उचित विकास एवं कल्याण की दृष्टि से प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना अति आवश्यक हो गया है । भूमि, जल, वन, खनिज, खाद्य एवं ऊर्जा ये वे प्राकृतिक संसाधन हैं जो, जीव जन्तु एवं मानव जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते है तथा प्रकृति द्वारा प्रदत्त अनमोल उपहार होता है इनके उत्खनन एवं असीमित व फिजुल उपयोग अनेक पर्यावरणीय समस्यायें पैदा करता है । अतः इन प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना आवश्यक है ।

सन्दर्भ

1. *प्रसाद. अनिरूद्ध, (2009) ''पर्यावरण एवं पर्यावरणीय संरक्षण विधि की रूपरेखा'', सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन, इलाहाबाद*
2. *बरोलिया.ए., पाराशर राधिका, ''पर्यावरण शिक्षा के नये आयाम'', राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा*
3. *सिन्हा. मेघा, (2009) ''पर्यावरण प्रदूषण'',विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी*
4. *सिन्हा, मेघा, शर्मा, दीप्ती, कुमार. महेन्द्र, (2009) ''पर्यावरण अध्ययन'', विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी*